

LOK SABHA

Friday, March 30, 1973/Chaitra 9,
1895 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the
Clock

[Mr. SPEAKER in the Chair]

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

**घरेलू मांग को पूरा किये बिना ही वस्तुओं
का निर्यात**

* 541. श्री बनशाह प्रश्नान : क्या
वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे
कि :

(क) ऐसी कौन-कौन सी वस्तुएं हैं
जिन्हें घरेलू मांग को पूरा किये बिना ही
निर्यात किया जा रहा है ;

(ख) क्या इन वस्तुओं के निर्यात को
रोकने और इन के घरेलू उपयोग के लिये
नीति निर्धारित करने में सरकार को कुछ
कठिनाईयां आ रही हैं ; और

(ग) यदि हां, तो तत्सम्बन्धी ब्यौरा
क्या है ?

THE MINISTER OF COMMERCE
(PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA):
(a) to (c). We have to maintain a
balance between the requirements of
the home market and the need to
earn foreign exchange through exports.
A policy suited to each commodity is
adopted and where necessary exports
are regulated.

श्री बनशाह प्रश्नान : मैं जानना चाहता
हूँ कि इन घरेलू आवश्यक चीजों में जो अपने
यहां बनती हैं या जमीन से उगने वाली हैं या
फैक्ट्रीज में बनने वाली हैं—ऐसी कौन-कौन
सी चीजें हैं जो आप बाहर भेजते हैं, उनके
नाम क्या हैं और कितनी मात्रा में भेजते
हैं.....

अध्यक्ष महोदय : इसका स्टेटमेंट टेबिल
पर रखना पड़ेगा, एक मिनट में कैसे बतला
देंगे। आपको इस का रूल मालूम होना
चाहिये जहां बहुत लम्बा और ज्यादा
पीरियड लगने वाला हो, वह यहां नहीं आता
है, उस के लिए अनस्टार्टेड क्वेश्चन बनाना
पड़ता है ।

श्री बनशाह प्रश्नान : अध्यक्ष महोदय,
हमारे देश के लोग कमजोर और गरीब हैं,
भिन्न-भिन्न चीजों के लिये तरसते हैं, मंहगाई
बढ़ रही है—इन सब बातों को ध्यान में
रखते हुए—इन चीजों के विदेश चले जाने
से जो षटिया सामान बाजार में बिकता है,
उसको बन्द करने के लिये क्या सरकार
कोशिश करेगी ?

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA:
Sir, as you have rightly pointed out
the total list of items that we export
is so big and lengthy that I cannot
enumerate them all.

अध्यक्ष महोदय : वह कहते हैं कि अच्छी
चीजें बाहर भेज देते हैं और षटिया यहां
बिकती हैं—आप इसके बारे में उन को जबाब
दीजिये ।

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA:
That is perhaps not correct; he is
not well informed.

श्री बनसाह प्रवाल : जनता का स्वास्थ्य विदेशी मुद्रा कमाने के लिये गिर रहा है । जो सामान अपने यहां बनता है उसको बाहर भेज देते हैं—ऐसी स्थिति में क्या आपको भारतीय जनता प्रिय है या विदेशी मुद्रा ।

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: I can quote the figures of some of the important commodities meant for popular consumption. The quantum has been considerably reduced this year in comparison to the previous years. The answer to his question obviously is that our love for the people is much more than that for foreign exchange.

श्री नरसिंह नारायण पांडे : क्या मंत्री महोदय इस बात पर विचार करेंगे कि हैण्डलूम और पावर लूम का करीब 30 करोड़ रुपये का कपड़ा बाजार में पड़ा हुआ है और एक्सपोर्ट नहीं हो पा रहा है । क्या इसके लिये आप कोई व्यवस्था करेंगे जिस से विदेशी मुद्रा भी कमाई जा सके और हमारी होम-इण्डस्ट्री भी समाप्त होने से बच सके ?

MR. SPEAKER: It is not relevant.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: We are not exporting yarn by starving our industry, powerloom or handloom.

SHRI MUHAMMED KHUDA BUKHSH: What is the amount of total foreign exchange earnings in respect of export of textiles from India and is there any further scope for earning foreign exchange?

MR. SPEAKER: May I request you to go through the original question? I will come back to you later.

श्री हुकूम चन्द कछवाय : माननीय मंत्री जी ने प्रश्न के उत्तर में बताया कि हमने कुछ चीजें बाहर भेजी कम कर दी हैं । मैं जानना चाहता हूँ कि इस समय जितनी चीजें बाहर भेजी जाती हैं—जिसमें खमीन से उत्पन्न होने वाली वस्तुएँ हाथ से

बनाई हुई वस्तुएँ और फैक्टरी में बनने वाली वस्तुएँ शामिल हैं, उनसे कितनी विदेशी मुद्रा हमें प्राप्त होती है जो माल यहां से हाथ का बना हुआ भेजा जाता है, वह किस भाव में लिया जाता है और किस भाव में बाहर भेजा जाता है, उनके दामों में कितना अन्तर होता है तथा क्या हाथ-बाली वस्तुओं में काफी कम पैसा मिलता है

अध्यक्ष महोदय : मेरी आप से भी यही प्रार्थना है कि आप सवाल को अच्छी तरह से पढ़िये ।

श्री हुकूम चन्द कछवाय : मैंने पढ़ा है, इसीलिये पूछ रहा हूँ ।

अध्यक्ष महोदय : मालूम देता है कि आपने नहीं पढ़ा है ।

श्री हुकूम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, आप पढ़ कर बतला दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने कहा है कि ऐसी चीजें कौन सी हैं जिन की हमारे देश में जरूरत है, उन की कमी होते हुए भी बाहर भेजी जा रही हैं ।

श्री हुकूम चन्द कछवाय : मैंने भी यही पूछा है—जितनी चीजें बाहर भेजी जाती हैं, उनके सम्बन्ध में मंत्री महोदय ने कहा है कि कुछ कमी की गई है—मैं कहता हूँ कि जितनी कमी की गई है, वह नहीं के बराबर है ।

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: I have already said that experts of commodities of popular, and essential consumption-character have been considerably reduced this year in relation to last year. To give an example, exports of sugar during April-September, 1972 were less than Rs. 10 crores as compared to Rs. 24 crores in April-September, 1971. Exports of certain pulses have been limited to a small annual quota of 5,000 tonnes. Many other items like groundnut, oil-cakes

and raw and semi-tanned hides and skins have also been reduced in quantum. That shows that items of essential commodities of a popular demand character have been considerably reduced because of the tight position in the home market.

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, मैंने पूछा था कि अनुपात जो है यानी यहां जो लोग बनाते हैं उनसे वह लिया जाता है और फिर वहां बेचा जाता है तो दोनों में अन्तर कितना है—इसका उत्तर मंत्री महोदय ने नहीं दिया है। मेरा कहना यह है कि यहां पर लोगों को ठीक दाम नहीं मिलते हैं।

अध्यक्ष महोदय : इसमें दाम का सवाल नहीं है।

श्री हुकम चन्द कछवाय : यहां के लोगों को पैसा कम मिलता है।

अध्यक्ष महोदय : आप सेप्रेट नोटिस दे दीजिए, अगर जरूरी होगा तो मैं एक्सप्ट कर लूंगा।

SHRI VASANT SATHE: Would the hon. Minister kindly state whether in view of the need for earning greater foreign exchange, luxury goods like cosmetics and others that are being produced even by some foreign companies in this country are exported to foreign countries in a larger quantity now, instead of being dumped in our own country?

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: We are not exporting cosmetic goods in a big quantity, and when we do that, we bear in mind the demand of the home market.

SHRI B. N. REDDY: May I know whether the Central Government gives priority consideration to meet the local domestic needs before deciding to export any commodity?

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: I have already answered the question in the affirmative.

MR. SPEAKER: That is the first question that was answered. If you want more clarification about it, you can put it in a different shape. But this question was exactly the first question that was answered.

SHRI P. R. SHENOY: What is the total amount of foodgrains exported to Bangladesh during 1972-73, and are we going to export foodgrains to Bangladesh in 1973-74 also? (*Interruption*) There is shortage of foodgrains in the country and still we are exporting them to foreign countries.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: Because of the very peculiar and a very new sort of relation that we have with Bangladesh, in the case of scarcity in some items of foodgrains we have to send some quantum of foodgrains to Bangladesh, both wheat and rice.

SHRI K. S. CHAVDA: Sir,—

MR. SPEAKER: This question has taken so much time. I am not bound to call all of you. This has taken time. We are not able to do many questions in a day. Now, Mr. Patel. Please sit down, all of you.

SHRI K. S. CHAVDA: Sir, on a point of order. The Minister has not replied to part (a) of the question. He has not replied at all. He mentioned only sugar, edible oils, hides and skins. He has not replied to the main question.

MR. SPEAKER: This is too long a question. It is much better he lays a statement on the Table. It is too long a question.

SHRI K. S. CHAVDA: From the very start, when the hon. Minister replied, he has not replied to part (a) of the question. Only when supplementaries were put, sugar, edible oil, etc. came out as being exported.

MR. SPEAKER: If the list is a long one, such a list should be laid on the Table of the House.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: The list is with me and I am laying it on the Table of the House.

MR. SPEAKER: Is the information which he wants already mentioned in the statement?

SHRI K. S. CHAVDA: There is no statement at all.

MR. SPEAKER: The hon. Minister said he laid it on the Table of the House.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: If you so desire, I shall lay it now; it is with me.

MR. SPEAKER: What is this? When you say it is laid on the Table, it must come to our office so that the Members may see it. Each statement is sent to the Member. That is why they are confused over it.

PROF. D. P. CHATTOPADHYAYA: The question is of a general character and unless a supplementary was there, the detail could not be given. A supplementary is there and I am laying it now.

Exports being made to attract tourists from Asian countries

*542. **SHRI ARVIND M. PATEL:** Will the Minister of TOURISM AND CIVIL AVIATION be pleased to state:

(a) what efforts Government are making to attract tourists from Asian countries; and

(b) whether there is more scope for attracting tourists from these countries?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF TOURISM AND CIVIL AVIATION (DR. SARAJINI MAHISHI): (a) The Government of India has opened Tourist Offices in Tokyo and Singapore for purposes of tourist publicity and promotion. The number of tourists from Asian countries rose in 1972 to 93372—approximately 80 per cent of the total tourist traffic.

(b) There is scope for attracting more tourists from these countries and efforts are being made to stimulate tourist travel.

श्री अरविन्द एम० पटेल : अध्यक्ष महोदय, मंत्री महोदय ने यह बताया कि टोकियो और सिंगापुर में टूरिस्ट ऑफिस खोल रहे हैं लेकिन देश में जो ऐसे पर्यटन के दर्शनीय स्थान हैं उनमें भी अभी काफी सुधार लाने की जरूरत है जैसे कि गुजरात में गीर जंगल की दर्शनीय स्थानों में गिनती होती है और वहां पर अधिक पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है और इसी प्रकार से पोरबन्दर महात्मा गांधी का जन्म स्थान है। गीर में लायन शो होता है तो क्या मंत्री महोदय यह बतायेंगे कि इन दो स्थानों पर अधिक धन खर्च किया जायेगा और उनको अधिक आकर्षक बनाया जायेगा ?

डॉ० सरोजिनी माहिषी : सवाल के साथ इसका कहां तक सम्बन्ध है, यह मैं नहीं कह सकती लेकिन मैं इसका जवाब दे सकती हूँ। गीर फारेस्ट में एकोमोडेसन, आवास बढ़ाने के लिए 12 लाख रुपया खर्च करके 50 लोगों के रहने के लिए नये ढंग से इन्तजाम कर रहे हैं। इसके साथ ही परिवहन की व्यवस्था की जा रही है। केम्पड एयरपोर्ट का डेवलपमेन्ट हो रहा है और पोरबन्दर एयरपोर्ट का भी डेवलपमेन्ट हो रहा है।

SHRI K. LAKKAPPA: The hon. Minister has stated that efforts are being made to locate offices in Asian countries to attract tourists. I would like to know from the hon. Minister as to whether the officers working in Bangkok and other places have made efforts to attract tourists from Asian countries. If so, what are the countries in which these officers are working?

DR. SARAJINI MAHISHI: Japan, Ceylon, Malaysia, Singapore, Thailand, Hong Kong and Phillipine are the Asian countries from which we get tourists. The types of tourists who